ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 191-194

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 वैश्विक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति शैक्षणिक वातावरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. श्रीमती ताजुबर शेख
2. डॉ0 विजय पाराशर

1. शोध अध्येत्री, 2. एसोसिएट प्रोफेसर– बी.सी.जी. शिक्षा महाविद्यालय, देवास (म0प्र0) भारत

Received-04.02.2023, Revised-10.02.2023, Accepted-15.02.2023 E-mail: tajubar@gmail.com

सारांशः ***शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास मे सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है, उन्हें अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती हैं। सक्रिय रहकर सीखने की विधि में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों कक्षा शिक्षण में सक्रिय रह रहे हैं। सक्रिय रहने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ती है, बच्चें खुश नजर आ रहे हैं। उनमें सिखने के प्रति अधिक जिज्ञासा उत्पन्न हो रही हैं। बच्चें बिना झिझक के शिक्षकों से अपनी समस्याओं का समाधान पूछ रहे हैं। सक्रिय रहकर सीखने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनशीलता बढ़ रही हैं। कोरोना वायरस का प्रभाव आज समूचे विश्व पर पड़ रहा है। दुनिया के लगभग सभी देश इससे प्रभावित हो रहे हैं। इस वायरस के कारण कई देश आर्थिक तंगी से गुजर रहे हैं। और हम धीरे–धीरे वैश्विक मंदी की तरफ बड़ रहे हैं। कोरोना वायरस की वजह से कई कठिनाईयाँ आई। कई देशो में लॉकडाउन और कर्फ्यू की स्थिति रही। जिसके कारण कई क्षेत्र प्रभावित हुए जैसे उद्योग जगत, सामाजिक क्षेत्र आर्थिक क्षेत्र एवं इसके साथ–साथ एक अत्यंत ही महत्तवपूर्ण क्षेत्र है।***

कुंजीभूत शब्द– जन्मजात, स्वाभाविक विकास, सर्वांगीण विकास, वातावरण, शिक्षण, जिज्ञासा, समाधान, लॉकडाउन।

शिक्षण का क्षेत्र कोरोना महामारी से अत्यंत ही प्रभावित हो रहा है। जिसके कारण आज तक स्थिति सामान्य नही हुई हैं। प्राथमिक हो, माध्यमिक हो या उच्च शिक्षा छात्रों का पठन–पाठन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है, कुछ संस्थानों ने ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का इस्तेमाल कर अपने छात्रो को सहयोग करने की पूरी कोशिश की हैं। भारत सरकार एवं सभी राज्यों की सरकारों ने भी इस दिशा में कई कदम उठा रही है। छात्रों को विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से "इ" कर्टेंट उपलब्ध कराया जा रहा है, परन्तु यह कक्षा–कक्ष शिक्षा प्रणाली की तरह प्रभावी नहीं हैं। छात्रों की इंटर्नशीप के लिए भी कई कंपनिया आगे आ रही है फिर भी जरुरत है बड़ें पैमानें पर संस्थाओं को आगे आने की, जिससे छात्र एक तो अपना कोर्स पूरा करेगें साथ ही साथ आत्मविश्वास के साथ शैक्षणिक गतिविधियों में खुद व्यस्त रहेंगे, एक और महत्तवपूर्ण विषय है कि जो छात्र पहलें खुल कर रहते थे, विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल, मनोरंजन आदि में अपने सहपाठियों के साथ खुलकर भाग लेते थे, आज वो छात्र अपने घरो में कैद है, सामाजिक दूरी बना रहे है। ऐसे में अगर यह स्थिति आगे भी बनी रही, तो यह छात्र मानसिक तनाव में आ सकते है। वहीं टी.वी., लेपटॉप, मोबाईल, का अधीक उपयोग भी उनकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव डाल रहा है। मानसिक अवसाद की ऐसी अवस्था से छात्रों को बचाने के लिए मनोवैज्ञानिकों को आगे आना चाहिए एवं उनका मार्गदर्शन करना चाहिए।

कोविड–19 (कोरोना महामारी) का दौर बितने के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र मे उभरने वाले आयामों पर किए गए एक अध्ययन मे कहा गया है कि कोविड–19 महामारी के कारण डिजीटल माध्यम से अधिक मात्रा में लोग पढ़ाई कर रहे है और कम समय–सीमा वाले पाठ्यक्रम भी लोकप्रिय हो रहे है। इन बदलावों से कठिनाईयॉ तो हो रही है, लेकिन इनमें शिक्षा के क्षेत्र में नए विचारो के उदाहरण भी सामने आ रहे है। इससे यह साफ है कि शैक्षणिक जगत में डिजीटल माध्यम का प्रभाव लंबे समय तक रहने वाला है। कोरोना महामारी के दबाव के कारण स्कूल और कॉलेजों में पढ़ाई करने के लिए डिजीटल माध्यम का प्रयोग और अधिक किया गया है। जिसके कारण शैक्षणिक लक्ष्यों को जैसे एप और ई–मेल का प्रयोग बढ़ गया है। शैक्षणिक संस्थान ऐसी सरंचना का विकास कर रहे है, जिससे अध्यापक और छात्र शैक्षणिक संस्थानों से बाहर रहते हुए भी पठन–पाठन संभव हो रहे है एवं गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन शिक्षा दी जा रही है।

कोविड–19 के नाम से पुकारे जाने वाले इस वायरस का पूरा नाम कोरोना–वायरस है। यह वायरस आज संपूर्ण विश्व में ज्वालामुखी की भांति फैलता जा रहा है। चीन से शुरु होने वाला यह वायरस भारत समेत अनेक देशों के करोड़ों निवासियों की जान ले चुका है। अभी भी यह पुरी तरह से खत्म नहीं हुआ है, इसका खतरा प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर मंडरा रहा है। कोविड–19 एक भयंकर संक्रमण है, जो कि एक दूसरे के संपर्क में आने वाले से फैलता है। यह वायरस साल 2019 में चीन देश से शुरु हुआ था। चीन में इस संक्रमण से संक्रमीत पहला केस 8 नवंबर को सामने आया पूरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया है। कोरोना वायरस (कोविड–19) से संबंधीत कई प्रकार के वायरसो में से एक है। कोविड–19 के कारण तथा वर्ष 2019में इसकी उत्पत्ती होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड–19 रखा है। पहले इसे चिनी वायरस का नाम भी दिया गया परन्तू WHO के अनुसार, इसका नाम कोविड–19 रखा गया। विश्व संगठन के अनुसार, वायरस का नाम किसी

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भी देश के नाम से या अनुचित रुप से प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। खासना, छींकना, तेज बूखार आना तथा गंध व स्वाद का आभास न होना कोरोना वायरस के लक्षण है। इन लक्षणों के अतिरिक्त व्यक्ति को सांस लेने में भी कठीनाई का सामना करना पड़ता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल सुगम एवं बोधगम्य बनाने के लिए शिक्षक हर संभव प्रयास करते हैं और प्रत्येक समय यहि सोचते रहते हैं कि कैसे या फिर किन साधनों के माध्यम से शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जाए और अपनी बात आसानी से विद्यार्थियों तक कैसे पहुचाई जाए ताकी उनको समयानुकूल नवीन एवं स्थाई ज्ञान प्रदान किया जा सकें। इसमें जरा भी संदेह नहीं कि ऑनलाईन प्लेटफॉर्मस शिक्षण अधिगम को प्रभावशाली बनाकर उसके प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमीका निभा रहे है। ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थी इंटरनेट एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे टी.वी., कम्प्युटर, टेबलेट, लेपटॉप, रेडियों, स्मार्ट फोन आदि के द्वारा घर बैठे ही शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इनके माध्यम से डीप लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, मशीन टू मशीन संचार, तथा ई–शिक्षा आदि को बढ़ावा मिल रहा है।

अध्ययन का ओचित्य– कोरोना के दौरान जो अभिभावक ऑनलाइन शिक्षा संबंधी उपकरण, डेटा प्लान आदि की व्यवस्था जुटा पाए, तो भी सिर्फ एक–दो बच्चों तक ही सीमित रही। ऐसे परिवार जहॉं इससे ज्यादा बच्चे थे, वहॉं बालिकॉए इन सुविधाओं से वंचित रह गई। संयुक्त राष्ट्र संघ महासचिव ने भी कहा था कि कोविड–19 महामारी शिक्षा की अब तक की सबसे बड़ी बाधा है। इससे सबसे अधिक लड़किया तथा महिलॉए प्रभावित होगी। एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (ASAR-2021) भी बताती है कि उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल जैसे सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्यों में भी बच्चों के पास स्मार्ट फोन सबसे कम थे, उनके पास मूलभूत संसाधन नही थे, जबकि इनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ होती है। तो गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले, सरकारी, बेसिक शिक्षा, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं अभिभावकों की असहाय एवं दयनीय स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। जहॉं केवल 24% घरों–घरों में ही इंटरनेट की सुविधा हो, केवल 11% घरों में कम्प्युटर की सुविधा देखी गयी, 30% लोगों के पास ही स्मार्ट फोन पाये गये, लेकिन इस ऑनलाइन शिक्षा का कही न कही हमारी शिक्षा व्यवस्था पर असर दिखाई दे रहा है। क्या सच में ऑनलाइन शिक्षा देश की सारी शैक्षिक जरुरतों का हल हैं। क्या ऑनलाइन शिक्षा कक्षीय शिक्षा का समुचीत विकल्प है और क्या यह भारतीय परिवेश के अनुकूल है। क्या नियमित कक्षा में किया गया शिक्षण कार्य उचित है। अतः इस बात की जिज्ञासा महसूस की गई की क्या कोविड महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा सभी विद्यार्थियों का समावेश कर पाने में कारगार रही? क्या कोविड–19 महामारी के दौरान यह शिक्षा वैकल्पिक शिक्षा के तौर पर कामयाब रही? क्या यह शिक्षा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं? अतः इन प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों व अभिभावकों का कोविड–19 के दौरान शैक्षणिक वातावरण का अध्ययन का चयन किया गया।

अध्ययन के उद्धेश्य–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाईन शिक्षा के प्रति मूल्यांकन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की भूमिका का अध्ययन करने में सार्थक अंतर पाया जाता है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाईन शिक्षा के प्रति मूल्यांकन की प्रक्रिया का अध्ययन करने में सार्थ अंतर पाया जाता है।

सीमांकन– प्रस्तुत शोध कार्य हेतु देवास जिले के सरकारी व निजी विद्यालयों को ही सम्मिलित किया गया है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की भूमिका

(तालिका – 01) ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की भूमिका

[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	[illegible]	[illegible]
2	[illegible]	[illegible]
3	[illegible]	[illegible]
4	[illegible]	[illegible]
5	[illegible]	[illegible]
6	[illegible]	[illegible]
7	[illegible]	[illegible]
8	[illegible]	[illegible]
9	[illegible]	[illegible]
10	[illegible]	[illegible]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

तालिका–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (74%) अभिभावकों ने कोविड–19 से परिस्थितियॉ अनुकूल होने तक अपने बच्चे को ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण कराने की इच्छा व्यक्त की है। (68%) अभिभावकों ने माना कि ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के कारण बच्चों की मोबाइल/टेबलेट एवं लैपटॉप आदि की लत को छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा। (67%), (66%), (65%) तथा (60%) अभिभावकों ने क्रमशः माना कि ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों की स्क्रीन टाईमिंग बढ़ रही है, स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ उत्पन्न हो रही है, ऑनलाइन शिक्षा के नाम पर निजी संस्थानों में फीस वसूलनें की होड़ मची है। तथा इस शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की रुचि घट रही है। (61%) अभिभावकों ने कहा कि वह बच्चों को मिल रही ऑनलाइन शिक्षा से संतुष्ट है। (47%) अभिभावकों ने इस शिक्षा की वजह से शिक्षकों के पढ़ाने के तरीकों की जानकारी प्राप्त होने की बात कही है।

ऑनलाइन शिक्षा संबंधी पर्याप्त साधन की उपलब्धता को अभिभावकों ने स्वीकार किया, जबकि (33%) अभिभावकों ने इन साधनों की अनुपलब्धता की बात की है। (56%) अभिभावकों का मानना है कि शिक्षा के दौरान बच्चें गेम्स, कार्टून, मूवी, चैट आदि भी देखने लगते है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड–19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के प्रति मूल्याकंन की प्रक्रिया

(तालिका – 04) ऑनलाइन शिक्षा के प्रति मूल्यांकन की प्रक्रिया

क्रमांक	प्रश्न	सह %
1	क्या ऑनलाइन कक्षा में मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति हो रही है।	74
2	जो विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं। क्या उनका उपलब्धि स्तर प्रभावित होगा।	72
3	ऑनलाइन में परीक्षा संबंधी प्रश्न पूछने पर क्या आप तनाव आदि महसूस कर रहे हैं।	70
4	इस तरह मूल्यांकन की प्रक्रिया से बच्चों की मानसिक स्थिति पर प्रभाव पैदा कर रही है।	68
5	क्या ऑनलाइन कक्षाओं में मूल्यांकन की प्रक्रिया सही हैं।	60
6	ऑनलाइन कक्षा से विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक, भावात्मक विकास संभव है।	57
7	क्या ऑनलाइन के माध्यम से परीक्षा देने पर आपके पास पर्याप्त साधन होता है।	50
8	क्या ऑनलाइन के माध्यम से ली गयी परीक्षा के परिणाम छात्रों के अनुकूल है।	44
9	क्या ऑनलाइन मूल्यांकन से विद्यार्थियों में प्रयोगात्मक एवं कौशल आधारित ज्ञान प्राप्त हो रहा है।	40
10	ऑनलाइन में परीक्षा से संबंधित प्रश्नों के उत्तर ईमानदारी से पूर्ण कर पा रहे है।	30

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक (74%) ऑनलाइन कक्षा में मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति प्रभावित हो रही है। (70%) विद्यार्थियों में मूल्यांकन के समय परीक्षा संबंधी प्रश्न पूछने पर तनाव की स्थिति देखी गयी है। (72%) विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहे है, जिसका प्रभाव उनके उपलब्धि स्तर पर देखा गया। (68%) विद्यार्थी में इस तरह परीक्षा प्रणाली से बच्चों की मानसिक स्थिति, तनाव एवं शारीरिक समस्याओं को देखा गया। (50%), (40%) विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा से उनका अधिगम स्तर प्रभावित हो रहा है साथ ही उनकी पाठ्य सामग्री भी पूर्ण रुप से नहीं मिल पाने के कारण कई प्रकार की शंकाओं का समाधान भी नही हो पाता है। इसके साथ विद्यार्थियों के पास मोबाइल, लेपटाप आदि संसाधनों की कमी आने से कई विद्यार्थियों परीक्षा से भी वंचित देखे गये। (40%) विद्यार्थी ऑनलाइन मूल्यांकन की प्रक्रिया से उनके अंदर विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास भी सम्भव नहीं है। (30%) विद्यार्थी ऑनलाइन में परीक्षा से संबंधीत प्रश्नों के उत्तर ईमानदारी से पूर्ण कर सके (70%) विद्यार्थी तो इस प्रकार के देखे गये, जिन्होने पीडीएफ या गुगल पर सर्च करके अपने प्रश्नों के उत्तर देना उचित समझा।

निष्कर्ष– ऑनलाइन शिक्षा के प्रति अभिभावकों की भूमिका के अवलोकन यहॉ निष्कर्ष निकला की सर्वाधिक अभिभावकों ने कोविड–19 से परिस्थितियॉ अनुकूल होने तक अपने बच्चें को ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा ग्रहण कराने की इच्छा व्यक्त की है, कुछ अभिभावकों ने माना कि ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण करने के कारण बच्चों की मोबाइल/टेबलेट एवं लैपटॉप आदि की लत को छुड़ाना मुश्किल हो जायेगा। साथ ही अभिभावकों ने क्रमशः माना कि ऑनलाइन शिक्षा के कारण विद्यार्थियों की स्क्रीन टाईमिंग बढ़ रही है, स्वास्थ्य संबंधी समस्याऍ उत्पन्न हो रही है। ऑनलाइन शिक्षा संबंधी पर्याप्त साधन की उपलब्धता व

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

कुछ क्षेत्र में इन साधनों की अनुपलब्धता की बात की है। मूलतः अभिभावकों से यहॉ निष्कर्ष प्राप्त हुवा कि सामान्य परिस्थिति न होने पर स्कूलों के बंद होने पर ऑनलाइन शिक्षा ही एकमात्र उपाय हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के प्रति मूल्यांकन की प्रक्रिया दौरान निष्कर्ष निकला कि सर्वाधिक ऑनलाइन कक्षा में मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति प्रभावित हो रही है व विद्यार्थियों में मूल्यांकन के समय परीक्षा संबंधी प्रश्न पूछने पर तनाव की स्थिति देखी गयी है। जिसका प्रभाव उनके उपलब्धि स्तर पर देखा गया। विद्यार्थी में इस तरह परीक्षा प्रणाली से बच्चों की मानसिक स्थिति, तनाव एवं शारीरिक समस्याओं को देखा गया। विद्यार्थियों ने स्वीकार किया कि इस प्रकार ऑनलाइन शिक्षा से उनका अधिगम स्तर प्रभावित हो रहा है साथ ही उनकी पाठ्य सामग्री भी पूर्ण रुप से नहीं मिल पाने के कारण कई प्रकार की शंकाओं का समाधान भी नही हो पाता है। इसके साथ विद्यार्थियों के पास मोबाइल, लेपटाप आदि संसाधनों की कमी आने से कई विद्यार्थियों परीक्षा से भी वंचित देखे गये। विद्यार्थी ऑनलाइन मूल्यांकन की प्रक्रिया से उनके अंदर विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास भी सम्भव नहीं है। विद्यार्थी ऑनलाइन में परीक्षा से संबंधीत प्रश्नों के उत्तर ईमानदारी से पूर्ण कर सके इस पर भी संशय बना हुवा है, अतः ऑनलाइन मूल्याकंन प्रक्रिया से यहॉ निष्कर्ष निकलाता हैं कि ऑनलाइन शिक्षा से मूल्यांकन सुव्यवस्थित नहीं हो सकता क्योंकी इसमें विद्यार्थी व शिक्षक, आमने–सामने एक दूसरे के समक्ष नहीं होते हैं, जिससे मूल्यांकन पद्धति की शुद्धता पर प्रश्न चिन्ह लगता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाडिया लीला चंद्रन (2020)–कोविड–19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा की जरुरत और चुनौतियॉ।
2. अहमद वसीम एवं कुमार अनिल (2020) – कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षा की भूमीका चुनौतियॉ और भविष्य एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।
3. अरोड़ा ए.के. एंड श्रीनिवास आर. (2020) – इम्पैक्ट ऑफ पेंडिमिक कोविड–19 ऑन द टीचिंग–लर्निंग प्रोसेस : ए स्टडी ऑफ हायर एजुकेशन टीचर्स।
4. श्रीवास्तव एस. एंड दवे, ए.सी. (2021) – कोविड–19 सिनेरियो ऑफ ऑनलाइन एजुकेशन।
5. विजयलक्ष्मी वाई, दास जे. एवं अन्य (2020) – असेसमेंट ऑफ ई–लर्निंग रेडीनेस ऑफ अकादमिक स्टॉफ एंड स्टूडेंट्स ऑफ हायर एजुकेशन इंस्टिट्यूट इन गुजरात।
6. Tadesse Sabu, Muluye Worku - विकासशील देशों में शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 महामारी का एक प्रभाव।

*****